हजारों घरों में टेस्ट ट्यूब बेबी से जले चिराग : रश्मि गोयनका

● साक्षात्कार एवं कथा : मदन मोहन महाराज

आज के दौर में टेक्नोलॉजी इस कदर बढ़ गई है कि इसकी मदद से हमने लगभग हर नामुमकिन संभावनों के जवाब ढूंढ लिए हैं। ये इसी तकनीक का ही वरदान है कि हम सूरज चांद जैसे रहस्यमयी विषयों की वास्तविकता का पता लगा पाए हैं। तकनीकी स्तर पर हमारा इस कदर विकास हुआ है कि कल तक जिसे केवल किस्मत का खेल और भगवान की मर्जी पर छोड़ दिया जाता था, आज उन सभी इच्छाओं को भी हमने कई जरूरतों को टेक्नोलॉजी के सहारे हासिल कर लिया है। इसलिए अब चमत्कार अभिशाप नहीं रहा। लगातार हो रहे शोध व अध्ययन की मदद से नि:संतान दंपति को मुट्ठी गोद भरने में कामयाब हो रहे हैं और इस कार्य को असम समेत पूर्वोत्तर में आईएचआर (गोयनका मेडिकल होम) के टेस्ट ट्यूब बेबी सेंटर प्रमुख तथा जाने-माने एंब्रियोलॉजिस्ट रश्मि गोयनका बखूबी इस क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। रश्मि का कहना है कि किसी भी वजह से मां-बाप बनने में परेशानी हो रही हो तो कोई बात नहीं, टेस्ट ट्यूब बेबी के नाम से मशहूर तकनीक है हमारे पास, जिसके माध्यम से बच्चा पैदा किया जाता है। कानपुर निवासी पवन सर्राफ व सह सर्राफ की सुपुत्री रश्मि का जन्म सिलीगुड़ी में हुआ। वे वहीं से दसवीं कक्षा पास कर राजस्थान के पिलानी से 12वीं और बाद में दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक की। साथ ही बाद में रश्मि ने पूर्वे के सीएमएस विश्वविद्यालय से मास्टर इन क्लिनिकल एंब्रोलॉजी (भ्रूण विज्ञान) का कोर्स पूरा किया। वर्ष 2000 में गुवाहाटी के डॉ. मोहन गोयनका व पुष्पा गोयनका के सुपुत्र डा.दीपक गोयनका के साथ विवाह के बंधन में बंध गईं। समाज में नि:संतान दंपति की मायूसी भरा चेहरा देखने पर उन्हें काफी पीड़ा होती थी। रश्मि आर्यन और अंश नामक दो बच्चे की मां बनने के बाद 2010-12 में ऐसे लोगों की पीड़ा को दूर करने के लिए अध्ययन कर ऐसे दंपतियों के लिए भ्रूण (इंब्रोयो) तैयार कर उनके जीवन को खुशहाल बनाने की दिशा में लगी हुई हैं। रश्मि कहती हैं कि भ्रूण विज्ञान (एंब्रियोलॉजि) प्रक्रिया के अंतर्गत स्त्री के अंडाणु पुरुष के शुक्राणु के साथ मिलाकर क्रमबद्ध तरीके से पूर्ण शिशु होने तक बड़ी सतर्कता से काम किया जाता है। उनका कहना है कि अंडाणु से कोशिकाओं के जरिए बच्चों में होने वाले संभावित बीमारियों की भी जांच की जाती है ताकि टेस्ट ट्यूब बच्चा स्वस्थ पैदा हो। उन्होंने कहा कि जो दंपति गर्भ नहीं धारण कर पाते उन्हें टेस्ट ट्यूब बेबी की इस तकनीकी के सहारे औलाद का सुख मिलता है। रश्मि का कहना है कि महिला और पुरुष की अधिक उम्र भी गर्भ न धारण करने की बहुत बड़ी वजह बन जाती है और ऐसे दंपतियों को भी यहां माता-पिता बनने का मौका मिला है। अगर कोई महिला प्राकृतिक तरीके से गर्भ धारण नहीं कर पाती है तो आज के दौर में उनके लिए मेडिकल साइंस में टेस्ट ट्यूब सबसे अहम है। आईवीएफ की सफलता दर 50-60 फीसद है। उनका कहना है कि सैकड़ों ऐसे कपल हैं जो घर से बाहर रहते हैं,व्यापार में व्यस्त हैं या बच्चा देरी से पैदा करना चाहते हैं। उनके लिए शुक्राणु फीजिंग की सुविधा है और लोगों ने किया भी है। उसके बाद महिलाएं अपनी इच्छा अनुसार मां बन सकती हैं। वहां सालों तक महिला का अंडाणु व पुरुषों का शुक्राणु और अंडाणु सुरक्षित रखा जा रहा है। यह कार्य काफी कठिन होता है। यहां तकनीक से इच्छा अनुसार भ्रूण प्रत्यारोपित भी किया जाता है। उल्लेखनीय है कि टेस्ट ट्यूब के जरिए संतान सुख केलिए पूर्वोत्तर समेत बांग्लादेश,नेपाल, दिल्ली और सिलीगुड़ी के नि:संतान दंपतियों को संतानसुख मिला है। उनका कहना है कि जब किसी दंपति को टेस्ट ट्यूब के जरिए स्वस्थ बच्चा पैदा होता है तो हमारी टीम को खुशी ठिकाना नहीं होता है। इस चिकित्सालय की ओर से समय-समय पर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। अंत में उन्होंने कहा कि लोग इस समस्या को लेकर संकोच न करें, आगे आएं।